International Journal of Sociology and Political Science
www.sociologyjournal.in
Online ISSN: 2664-7745
Received: 18-07-2026, Accepted: 17-08-2026, Published: 01-09-2026
Volume 8, Issue 3, 2026, Page No. 127-130

इंडो– पेसिफिक क्षेत्र में भारत की रणनीतिक स्थिति का विश्लेषण: एशिया पावर रिपोर्ट (2025 के विशेष संदर्भ में)

शिवांशु गर्ग [1], डॉ. अनुराधा जैन [2]
[1] शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत
[2] प्रोफेसर, शोध निर्देशिका, राजनीति विज्ञान विभाग, शासकीय कन्या महाविद्यालय, सतना, मध्य प्रदेश, भारत
DOI: https://doi.org/10.66856/ijsps.2026.8.3.8082

सारांश
यह अध्ययन Indo-Pacific क्षेत्र में भारत की रणनीतिक स्थिति का गहराई से विश्लेषण करता है, खासकर Asia Power Index 2025 के संदर्भ में। निष्कर्षों से यह साफ होता है कि 2020 से लेकर 2025 के बीच, भारत की शक्ति में संतुलित वृद्धि हुई है। इस दौरान, भारत एक ″emerging power″ से बढ़कर एक ″major power″ के रूप में उभरा है। हालांकि, भारत की कूटनीतिक गतिविधियाँ, बहुपक्षीय भागीदारी, और जनसांख्यिकीय फायदे उसकी प्रमुख ताकत माने जाते हैं, लेकिन आर्थिक विकास और सैन्य आधुनिकीकरण के मामले में वह अभी भी चीन और अमेरिका से पीछे है। अध्ययन यह भी बताता है कि एशिया की शक्ति संरचना वर्तमान में द्विध्रुवीय स्थिति में है, जिसके तहत भारत "balancing power" की भूमिका निभा रहा है। इस प्रकार, निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि भारत एक संक्रमणकालीन शक्ति है और उसे अपनी सम्पूर्ण रणनीतिक क्षमता हासिल करने के लिए महत्वपूर्ण संरचनात्मक सुधारों की आवश्यकता है।

मुलशब्द: हिंद–प्रशांत क्षेत्र, भारत, रणनीतिक स्थिति, एशिया पावर इंडेक्स (2020–2025), प्रमुख शक्ति, कूटनीति, सैन्य क्षमता

प्रस्तावना
इंडो–पैसिफिक क्षेत्र आज वैश्विक राजनीति का एक प्रमुख सामरिक और आर्थिक केंद्र बन गया है। यहाँ विश्व की प्रमुख शक्तियाँ—विशेषकर भारत, अमेरिका और चीन—अपनी स्थिति को मजबूत करने के लिए लगातार प्रयास कर रही हैं। यह क्षेत्र न केवल समुद्री मार्गों और व्यापारिक संपर्कों के लिए महत्वपूर्ण है, बल्कि यह वैश्विक शक्ति संतुलन के पुनर्निर्माण का भी एक महत्वपूर्ण स्थल है। इसी संदर्भ में, लोवी इंस्टीट्यूट द्वारा विकसित एशिया पावर इंडेक्स एक महत्वपूर्ण विश्लेषणात्मक उपकरण के रूप में सामने आया है, जो एशिया के विभिन्न देशों की शक्ति का तुलनात्मक मूल्यांकन करता है।

यह सूचकांक शक्ति को केवल सैन्य या आर्थिक दृष्टिकोण से नहीं देखता, बल्कि इसे एक समग्र अवधारणा के रूप में प्रस्तुत करता है। इसमें आठ प्रमुख पहलुओं को शामिल किया गया हैरू आर्थिक क्षमता, सैन्य ताकत, कूटनीतिक प्रभाव, सांस्कृतिक प्रभाव, आर्थिक संबंध, रक्षा नेटवर्क, लचीलापन, और भविष्य के संसाधन। इस तरह, यह इंडेक्स यह दर्शाता है कि किसी देश की क्षमता अपने बाह्य माहौल को किस हद तक प्रभावित करने की है। रिपोर्ट के अनुसार, शक्ति उस क्षमता को संदर्भित करती है जिसके द्वारा एक राज्य अंतरराष्ट्रीय घटनाओं पर प्रभाव डाल सकता है और अन्य देशों के व्यवहार को मार्गदर्शन कर सकता है।

सोर्स: एशिया पावर इंडेक्स रिपोर्ट 2021

Fig 1: Component of comprehensive power, Measures of power diagram, lowy institute Asia power index 2021

वर्ष 2020 से 2025 तक के एशिया पावर इंडेक्स के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि इस समयावधि में इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में शक्ति संतुलन में महत्वपूर्ण बदलाव आए हैं, जिसमें कोविड–19 महामारी एक प्रमुख कारक के रूप में उभरी। 2020 की रिपोर्ट में बताया गया था कि इस महामारी ने लगभग सभी देशों की शक्ति को प्रभावित किया और इसके परिणामस्वरूप एक नई क्षेत्रीय अस्थिरता का उदय हुआ। 2020 की रिपोर्ट में भारत की स्थिति को अपेक्षाकृत कमजोर माना गया, क्योंकि वह "उंरवत चवूमत जीतमीवसक" से थोड़ा नीचे था। इसका मतलब था कि देश में संसाधनों की कोई कमी नहीं थी, लेकिन उनका प्रभावी उपयोग अभी तक पूरी तरह से संभव नहीं हो पाया था। इसके बाद, 2021 में क्षेत्रीय शक्ति संरचना अधिक द्विध्रुवीय हो गई, जिसमें अमेरिका और चीन के बीच की प्रतिस्पर्धा गहराई से देखने को मिली। इस बीच, भारत और जापान अपेक्षाकृत पीछे रह गए। यह स्थिति भारत के लिए एक बड़ी चुनौती पेश करती है, क्योंकि उसे अपने आप को एक संतुलनकारी शक्ति के रूप में स्थापित करना था।

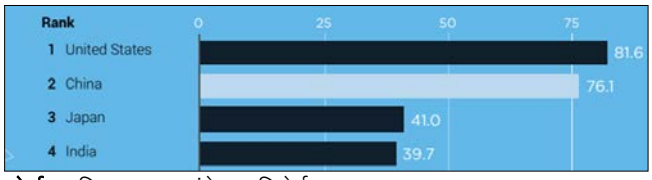

सोर्स: एशिया पावर इंडेक्स रिपोर्ट 2020

Fig 2: Asia Power Index Rankings (2020)

वर्ष 2023 तक भारत की स्थिति में कुछ सुधार अवश्य दिखते हैं, लेकिन यह सुधार सभी क्षेत्रों में समान नहीं था। एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत को "patchy power" के रूप में वर्णित किया गया, जिसका तात्पर्य यह है कि भारत की शक्ति असमान रूप से विकसित हो रही थी—कुछ क्षेत्रों में यह मजबूत स्थिति में थी, जबकि अन्य में यह अपेक्षाकृत कमजोर। उदाहरण के लिए, भारत की कूटनीतिक उपस्थिति और अंतरराष्ट्रीय संबंध गतिशील होते जा रहे थे, परंतु आर्थिक क्षमता और सैन्य आधुनिकीकरण के मामले में वह अभी भी चीन और अमेरिका से पीछे था। यह स्थिति दर्शाती है कि भारत के लिए केवल संसाधनों का विस्तार करना ही चुनौती नहीं था, बल्कि उनके प्रभावी उपयोग की भी चुनौती थी। इसके बावजूद, भारत ने इस समय में इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में अपनी उपस्थिति को मजबूत किया था और विभिन्न बहुपक्षीय प्लेटफार्मों पर सक्रिय ढंग से हिस्सा लेकर अपनी कूटनीतिक भूमिका को और उभारने की कोशिश की।

Table 1: Comparative Performance of India in Key Power Indicators (2023)

Indicator	India	China	USA
Economic	Low	High	High
Military	Medium	High	High
Diplomacy	Strong	Strong	Strong

सोर्स: एशिया पावर इंडेक्स रिपोर्ट 2023

वर्ष 2024 और 2025 भारत के लिए एक ऐसे महत्वपूर्ण बदलाव का संकेत दे रहे हैं, जहां उसकी रणनीतिक स्थिति में उल्लेखनीय सुधार देखा गया है। 2024 की रिपोर्ट में बताया गया है कि भारत ने जापान को पीछे छोड़ते हुए एशिया में तीसरा स्थान हासिल किया, जो उसकी बढ़ती ताकत का परिचायक है। हालाँकि, रिपोर्ट में यह भी स्पष्ट किया गया है कि भारत की असली क्षमता और उसकी वर्तमान सफलताओं के बीच एक अंतर बना हुआ है। 2025 की रिपोर्ट में उल्लेख किया गया है कि भारत अब "महान शक्ति" की श्रेणी में आ चुका है, जो उसकी दीर्घकालिक रणनीतिक प्रगति का स्पष्ट प्रमाण है। फिर भी, यह ध्यान देने योग्य है कि भारत की शक्ति अभी भी उसकी संभावनाओं से कम है, जो दर्शाता है कि उसे अपनी आर्थिक और सैन्य क्षमताओं को और मजबूती से मजबूत करने की आवश्यकता है।

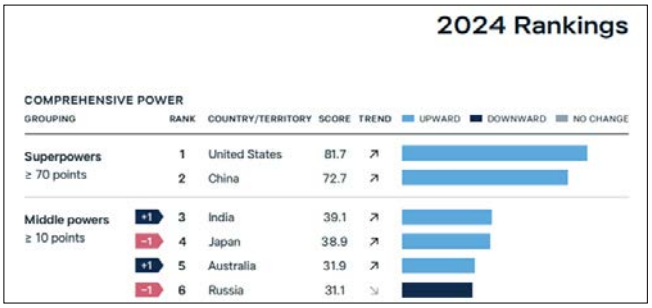

सोर्स: एशिया पावर इंडेक्स रिपोर्ट 2024

Fig 4: India's Rise to Third Position in Asia (2024)

साहित्यिक सर्वेक्षण

इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में भारत की रणनीतिक स्थिति पर उपलब्ध साहित्य यह संकेत करता है कि भारत एक विकासशील शक्ति के रूप में वैश्विक और क्षेत्रीय राजनीति में महत्वपूर्ण स्थान हासिल कर रहा है। इस मुद्दे पर विभिन्न विद्वानों और नीति–विश्लेषकों ने भारत की विदेश नीति, सामरिक दृष्टिकोण और शक्ति संतुलन में उसकी भूमिका पर विस्तृत शोध किया है।

सी. राजा मोहन की पुस्तक "India and the Rebalancing of Asia" इस संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण है, जिसमें वह सुझाव देते हैं कि चीन की शक्तिशाली स्थिति ने भारत को अपनी पुरानी नीतियों से बाहर निकलकर एक अधिक सक्रिय और संतुलनकारी भूमिका निभाने के लिए प्रेरित किया है। इस किताब में भारत को एशिया की उभरती हुई शक्ति के रूप में दर्शाया गया है, जो अमेरिका के साथ सहयोग और क्षेत्रीय साझेदारी के माध्यम से शक्ति संतुलन बनाने का प्रयास कर रहा है।

इस प्रकार, "Responding to Indo&Pacific Rivalry" (लेखक: Rory Medcalf और C. Raja Mohan) में "मध्य शक्ति गठबंधन" का विचार पेश किया गया है, जिसमें भारत, ऑस्ट्रेलिया और जापान जैसे राष्ट्र संयुक्त रूप से चीन के प्रभाव को संतुलित करने की कोशिश कर रहे हैं। यह शोध इस बात पर ध्यान केंद्रित करता है कि इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में बहुपक्षीय सहयोग भारत की रणनीतिक स्थिति को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

S. Jaishankar की पुस्तक "The India Way" में भारत की विदेश नीति को "strategic autonomy" और "multi-alignment" के सिद्धांतों पर आधारित बताया गया है। पुस्तक के अनुसार, भारत एकमात्र शक्ति के साथ पूरी तरह से जुड़ने के बजाय, अपने राष्ट्रीय हितों के अनुकूल विभिन्न देशों के साथ संतुलित संबंधों को प्राथमिकता देता है।

इसके अतिरिक्त India*s Great Power Politics में यह बताया गया है कि भारत चीन के बढ़ते प्रभाव का मुकाबला करने के लिए सैन्य, आर्थिक और कूटनीतिक उपायों का सहारा ले रहा है। इस पुस्तक में भारत की "balancing strategy" की गहराई से व्याख्या की गई है और यह स्पष्ट किया गया है कि भारत इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में शक्ति संतुलन बनाए रखने के लिए विभिन्न रणनीतियों का उपयोग कर रहा है।

अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान लेखों में भी इस विषय पर महत्वपूर्ण योगदान नजर आता है। उदाहरण के तौर पर, "India and the Allure of the Indo-Pacific" में यह सुझाव दिया गया है कि इंडो–पैसिफिक की धारणा भारत को वैश्विक राजनीति में एक

प्रमुख भूमिका में लाने का प्रयास करती है, जिससे उसकी रणनीतिक महत्वता बढ़ती है। और एशिया पावर इंडेक्स स्वयं इस विषय पर एक महत्वपूर्ण विश्लेषणात्मक ढांचा प्रस्तुत करता है, जो विभिन्न देशों की शक्ति का तुलनात्मक विश्लेषण करता है। इंडेक्स यह दर्शाता है कि शक्ति केवल संसाधनों की उपलब्धता पर निर्भर नहीं करती, बल्कि उनके प्रभावी उपयोग पर भी खास ध्यान देनी की जरूरत है।

शोध पद्धति, डेटा विश्लेषण एवं व्याख्या

इस अध्ययन में भारत की सामरिक स्थिति का मूल्यांकन करने के लिए गुणात्मक और मात्रात्मक अनुसंधान तरीकों का संयोजन किया गया है। यह शोध मुख्य रूप से द्वितीयक स्रोतों पर निर्भर करता है, जिसमें स्वूल Institute द्वारा प्रस्तुत एशिया पावर इंडेक्स (2020–2025) शामिल है। इस इंडेक्स में 26–27 देशों की शक्ति को आठ प्रमुख मापदंडों के जरिए आंका गया है, जैसे आर्थिक क्षमता, सैन्य क्षमता, टिकाऊपन, भविष्य के संसाधन, आर्थिक संबंध, रक्षा नेटवर्क, कूटनीतिक प्रभाव और सांस्कृतिक प्रभाव। इस शोध में भारत की स्थिति का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है, जिसमें मुख्य रूप से चीन और अमेरिका के साथ तुलना की गई है। इसके साथ ही, समय–श्रृंखला विश्लेषण के जरिये 2020 से 2025 के बीच भारत की शक्ति में आए परिवर्तनों का अध्ययन किया गया है। इस दृष्टिकोण से यह स्पष्ट हुआ है कि भारत की समग्र ताकत केवल उपलब्ध संसाधनों पर निर्भर नहीं करती, बल्कि उनके प्रभावी उपयोग पर भी निर्भर करती है।

भारत की आर्थिक क्षमता का विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि यह उसकी प्रमुख संरचनात्मक कमजोरी है। एशिया पावर इंडेक्स के अनुसार, जबकि भारत की अर्थव्यवस्था आकार में बड़ी है, वैश्विक आर्थिक प्रभाव के क्षेत्र में यह चीन और अमेरिका से पीछे रही है। 2024 के आंकड़ों के अनुसार, यह स्थिति और भी महत्वपूर्ण हो जाती है, इसके अनुसार भारत का समग्र पावर स्कोर लगभग 39.1 था वहीं, चीन का स्कोर 72.7 और अमेरिका का 81.7 था। 2025 तक भारत का स्कोर लगभग 40 तक पहुँच जाता है, जिससे भारत "महान शक्ति" की श्रेणी में शामिल हो जाता है। हालांकि, इस वृद्धि की गति अपेक्षाकृत धीमी रही है। भारत की आर्थिक चुनौतियों में प्रमुख रूप से सीमित औद्योगिक क्षमता, निर्यात–आधारित अर्थव्यवस्था की कमी और क्षेत्रीय आर्थिक नेटवर्क में उसकी अपेक्षाकृत कम प्रभावशीलता शामिल हैं। इसके विपरीत, चीन अपनी "आर्थिक कूटनीति" के जरिए एशिया में आर्थिक वर्चस्व स्थापित कर चुका है। इस तरह, भारत को अपनी वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता को मजबूत करने की आवश्यकता है, वरना उसकी रणनीतिक स्थिति सीमित रह सकती है।

भारत की सैन्य क्षमता और रक्षा नेटवर्क की स्थिति मिश्रित नजर आती है। देश के पास एक शक्तिशाली पारंपरिक सेना और तेजी से विकसित होती नौसैनिक ताकत है, जो उसे इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण खिलाड़ी बनाती है। हालांकि, एशिया पावर इंडेक्स यह दर्शाता है कि भारत की सैन्य शक्ति, विशेषकर तकनीकी उन्नयन और रक्षा निवेश के संदर्भ में, चीन से अभी भी पीछे है। फिर भी, भारत ने अपनी रक्षा साझेदारियों को सुदृढ़ बनाकर, खासकर फन्।क जैसे मंचों के जरिए, एक "force multiplier" प्रभाव उत्पन्न किया है। इसके परिणामस्वरूप, रक्षा नेटवर्क के क्षेत्र में भारतीय स्थिति अपेक्षाकृत मजबूत है, क्योंकि वह बहुपक्षीय सुरक्षा सहयोग में सक्रिय रूप से शामिल है। साथ ही, भारत की समुद्री रणनीति उसे हिंद महासागर क्षेत्र में एक "नेट सुरक्षा प्रदाता" के रूप में पहचान देती है। हालांकि, यह जरूरी है कि भारत को अपनी सैन्य क्षमताओं के आधुनिकीकरण में तेजी लानी चाहिए, ताकि वह क्षेत्रीय शक्ति संतुलन में एक प्रभावशील भूमिका निभा सके।

भारत की कूटनीतिक प्रभावशीलता उसकी सबसे बड़ी ताकत के रूप में उभर रही है, जिससे उसे अन्य शक्तियों से एक विशिष्ट पहचान मिल रही है। एशिया पावर इंडेक्स की रिपोर्ट के अनुसार, भारत ने हाल के वर्षों में अपने कूटनीतिक संबंधों और बहुपक्षीय सहयोग को काफी मजबूती प्रदान की है। 2023 और 2024 की रिपोर्टों में यह बात स्पष्ट होती है कि भारत की कूटनीतिक सक्रियता इसे एक "balancing power" के रूप में स्थापित करती है, जो अमेरिका और चीन के बीच संतुलन बनाए रखने की क्षमता रखती है। इसके अलावा, भारत की "बहु–समन्वयन" रणनीतिकृ जिसमें वह विभिन्न वैश्विक ताकतों के साथ समांतर संबंध बनाए रखता है— उसे रणनीतिक लचीलापन भी प्रदान करती है। भारत का सांस्कृतिक प्रभाव (सॉफ्ट पावर) उसकी कूटनीतिक ताकत को भी मजबूत करता है, जिसमें भारतीय प्रवासी समुदाय, योग, और सांस्कृतिक कूटनीति की अहम भूमिका है। इस तरह, जबकि भारत आर्थिक और सैन्य मोर्चों पर चुनौतियों और प्रतिरोध का सामना कर रहा है इसके बावजूद कूटनीति के क्षेत्र में उसकी स्थिति काफी मजबूत मानी जाती है। अंततः, लचीलापन और भविष्य के संसाधनों के संदर्भ में भारत की स्थिति काफी आशाजनक है, जो उसकी दीर्घकालिक रणनीतिक शक्ति का संकेत देती है। एशिया पावर इंडेक्स के मुताबिक, भारत की जनसंख्या संरचना, युवा श्रमिक बल और आर्थिक संभावनाएँ उसे भविष्य में एक महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में उभरने की दिशा में अग्रसरित कर रही हैं। हालांकि, वर्तमान में ये संभावनाएँ अभी तक वास्तविक शक्ति में बदल नहीं पाई हैं, जो "potential vs performance gap" को दर्शाता है। 2025 की रिपोर्ट के संदर्भ में बताया गया है कि भारत अब "major power" बन चुका है, लेकिन उसकी शक्ति उसकी वास्तविक क्षमता से अभी भी कम है। इस प्रकार, यदि भारत अपनी आर्थिक नीतियों में सुधार करता है, सैन्य आधुनिकीकरण पर ध्यान देता है और क्षेत्रीय सहयोग को मजबूत बनाता है, तो वह इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में उभर सकता है। इसलिए, यह कहा जा सकता है कि भारत की रणनीतिक स्थिति इस समय एक संक्रमण के दौर से गुजर रही है —जिसमें यह एक उभरती शक्ति से एक स्थापित वैश्विक शक्ति बनने की ओर बढ़ रही है।

निष्कर्षात्मक विश्लेषण

उपरोक्त विश्लेषण के अनुसार, इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में भारत की रणनीतिक भूमिका एक उभरती हुई, मगर असमान ताकत के रूप में विकसित हो रही है। 2020 से 2025 तक के Asia Power Index के अध्ययन में देखा गया है कि भारत ने अपनी कुल शक्ति में निरंतर बढ़ोतरी की है, खासकर 2024 और 2025 के दौरान, जब वह तीसरे स्थान पर पहुँचकर "मुख्य शक्ति" की श्रेणी में शामिल हो गया। हालाँकि, यह वृद्धि सभी क्षेत्रों में समान नहीं है। आर्थिक क्षमता और सैन्य आधुनिकीकरण में भारत अभी भी चीन और अमेरिका से पीछे है, लेकिन कूटनीतिक प्रभाव और भविष्य के संसाधनों के मामलों में उसकी स्थिति अपेक्षाकृत अधिक मजबूत नजर आती है।

दूसरा महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि एशिया की शक्ति संरचना आज भी मुख्यतः द्विध्रुवीय बनी हुई है, जिसमें अमेरिका और चीन के बीच स्पष्ट प्रभुत्व दिखाई देता है। भारत, जापान और अन्य मध्य शक्तियाँ इस स्थिति में संतुलन बनाए रखने का प्रयास कर रही हैं। विशेष रूप से 2023 और 2025 की रिपोर्टों से पता चलता है कि भारत का योगदान "चंजबील" या असमान रूप से रहा है, जो इस बात की ओर इशारा करता है कि भारत की शक्ति अभी पूरी तरह से समेकित नहीं हुई है।

तीसरा महत्वपूर्ण निष्कर्ष यह है कि, भारत की प्रमुख ताकत उसकी कूटनीतिक सक्रियता और बहुपरकारी भागीदारी में निहित है। भारत ने "बहु–समायोजन" की नीति अपनाते हुए विश्व की

विभिन्न शक्तियों के साथ संतुलित संबंध स्थापित किए हैं, जो इसे एक "balancing power" के रूप में पहचान दिलाती है। इसके अलावा, भारत की जनसंख्या और भविष्य के संसाधन उसे दीर्घकालिक रणनीतिक लाभ प्रदान करते हैं। हालांकि, यह भी साफ है कि यदि इन संसाधनों का सही ढंग से उपयोग नहीं किया गया, तो ये संभावनाएँ वास्तविक ताकत में तब्दील नहीं हो पाएंगी।

निष्कर्षात्मक विश्लेषण के आधार पर चर्चा

उपरोक्त निष्कर्षों के अनुसार, यह स्पष्ट होता है कि भारत इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में एक "transitioning power" के रूप में उभर रहा है, जो एक संभावित शक्ति से एक स्थापित शक्ति बनने की ओर बढ़ रहा है। लोवी इंस्टीट्यूट की एशिया पावर इंडेक्स रिपोर्टें इस बात की ओर इशारा करती हैं कि भारत की रणनीति पारंपरिक शक्ति राजनीति से भिन्न है, क्योंकि वह न तो किसी एक ब्लॉक के साथ पूरी तरह से जुड़ा है और न ही पूरी तरह से अलग थलग रहने की नीति अपनाता है। इसके विपरीत, भारत अपने हितों की सुरक्षा के लिए "strategic autonomy" और "multi-alignment" का सहारा लेता है।

इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में शक्ति संतुलन केवल सैन्य या आर्थिक पहलुओं पर निर्भर नहीं करता, बल्कि इसमें कूटनीतिक और संस्थागत प्रभाव भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारत ने इस क्षेत्र में अपनी कूटनीतिक पहल को बढ़ावा देते हुए विभिन्न बहुपक्षीय मंचों, जैसे क्षेत्रीय संवाद और सुरक्षा सहयोग में अपनी भागीदारी को बढ़ाया है। इस संदर्भ में, भारत को विशेषकर हिंद महासागर क्षेत्र में एक "नेट सुरक्षा प्रदाता" के रूप में देखा जा रहा है।

हालांकि, भारत के सामने कई महत्वपूर्ण चुनौतियां मौजूद हैं। चीन की बढ़ती आर्थिक और सैन्य ताकत भारत के लिए एक दीर्घकालिक रणनीतिक चुनौती बन गई है। इसके अलावा, अमेरिका के साथ भारत के संबंधों में सहयोग और प्रतिस्पर्धा दोनों का समावेश है, जिससे उसकी रणनीतिक स्थिति और भी जटिल होती है। इसलिए, भारत को अपनी रणनीति में संतुलन बनाए रखना अनिवार्य है, ताकि वह अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा करते हुए क्षेत्रीय स्थिरता को सुनिश्चित कर सके।

निष्कर्ष एवं सुझाव

इस शोध के परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि पिछले पाँच वर्षों (2020–2025) में इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में भारत की रणनीतिक स्थिति में महत्वपूर्ण बदलाव आया है। वर्ष 2020 में भारत "major power threshold" के नीचे था, जबकि 2025 तक वह एक स्थापित "major power" के रूप में उभर रहा है। यह बदलाव भारत की दीर्घकालिक रणनीतिक प्रगति को दर्शाता है, हालाँकि यह भी ध्यान में रखने वाली बात है कि यह प्रगति अभी पूर्ण नहीं है। भारत की मुख्य ताकतें उसकी कूटनीतिक सक्रियता, जनसंख्यात्मक लाभ और भविष्य के संसाधनों में निहित हैं, जबकि आर्थिक और सैन्य क्षेत्रों में उसकी कुछ प्रमुख कमजोरियाँ हैं। अगर भारत इन कमजोरियों को दूर करने में सफल होता है, तो वह इंडो–पैसिफिक क्षेत्र में एक निर्णायक शक्ति के रूप में उभर सकता है। इस प्रकार, एशिया पावर इंडेक्स (2025) के परिप्रेक्ष्य में, यह कहा जा सकता है कि भारत एक "balancing power" के रूप में उभर रहा है, जो क्षेत्रीय शक्ति संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

भारत की सामरिक स्थिति को मजबूत करने के लिए यह आवश्यक है कि वह व्यापक आर्थिक सुधारों को प्राथमिकता दे, जिससे निर्यात वृद्धि, औद्योगिक विकास और वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता पर ध्यान केंद्रित किया जा सके। इसके अलावा, सैन्य आधुनिकीकरण, विशेषकर नौसैनिक क्षमताओं को बढ़ाना आवश्यक है, ताकि इंडो–पेसिफिक क्षेत्र में प्रभावी उपस्थिति बनाए रखी जा सके। कूटनीतिक क्षेत्र में, भारत को बहुपरक सहयोग और क्षेत्रीय साझेदारी को बढ़ावा देने की आवश्यकता है और रक्षा सहयोग के जरिए सुरक्षा संरचना को मजबूत करना चाहिए। इसके साथ ही, अपनी युवा आबादी और भविष्य की संसाधनों का समुचित उपयोग करते हुए, भारत एक दीर्घकालिक सामरिक शक्ति के रूप में उभर सकता है।

संदर्भ सूची

1. Bekkevold JI, Kalyanaraman S. India's Great Power Politics: Managing China's Rise. (1st Ed.). by Routledge, 2021.
2. Jaishankar S. The India Way: Strategies for an Uncertain World. by HarperCollins India, 2022.
3. Lowy Institute. Key Findings Report 2020 for the Asia power index, 2020.
4. Lowy Institute. Key Findings Report 2021 for the Asia power index, 2021.
5. Lowy Institute. Key Findings Report 2023 for the Asia power index, 2023.
6. Lowy Institute. Key Findings Report 2024 for the Asia power index, 2024.
7. Lowy Institute. Key Findings Report 2025 for the Asia power index, 2025.
8. Mohan CR. India and the Rebalancing of Asia. Routledge, 2026.
9. Medcalf R, Mohan CR. Responding to Indo-Pacific rivalry: Australia, India and middle power coalitions. By Lowy Institute for International Policy, 2014.
10. Scott D. India and the Allure of the 'Indo-Pacific'. International Studies,2012:49(3-4):165-188.